DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
MO- 9415376545
B.A PART-I (Sub./Gen.)
LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No................ Date. 04/12/20

राज्य और इसके प्रमुख तत्व

(State : Nature and Elements)

राज्य के सामान्यतः चार तत्व माने जाते हैं

- जनसंख्या।
- भूखण्ड या भूमि
- सरकार
- संप्रभुता।

यद्यपि विभिन्न विचारकों में राज्य के तत्वों के विषय में अनेक विभिन्नता भी है। जैसे—

बिलोवी ने राज्य के तीन तत्व बताएँ हैं:-

(A) सामाजिक दृष्टि से एकता के सूत्र में आबद्ध एक समुदाय या समाज।

(B) एक राजनीतिक व्यवस्था या सरकार।

(C) एक लिखित या अलिखित संविधान जिसके द्वारा राज्य के पदाधिकारियों के दायित्वों को परिभाषित किया जा सके।

ब्लण्टशली के शब्दों में राज्य के आवश्यक तत्व हैं—

- भूखण्ड
- जनता
- एकता
- संगठन

PTO

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
Mo- 9415376545
B.A PART-I (Sub./Gen.)
LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No.................. Date..04/12/20..

सिजविक ने राज्य के तीन तत्व बताएँ हैं -

(i) भूखण्ड या भूक्षेत्र ।
(ii) जनता।
(iii) सरकार या शासन तंत्र ।

विचारक गार्नर और गेटिल जैसे प्रमुख विद्वानों ने भी राज्य के चार तत्व बताए हैं-

(i) जनसंख्या
(ii) निश्चित भूक्षेत्र
(iii) सरकार
(iv) संप्रभुता

सामान्यत: विद्वानों ने उपरोक्त लिखित राज्य के तत्वों के रूप में मान्यता प्रदान की है जिसकी विस्तृत चर्चा निम्नवत दृष्टव्य है-

(1) जनसँख्या - राज्य एक मानवीय समुदाय है। अतएव मनुष्यों के अभाव में इसकी परिकल्पना ही नहीं की जा सकती। राज्य का उद्देश्य मनुष्य की विविध आवश्यकताओं की पूर्ति और समाज में व्यवस्था स्थापित करना है। अत:एव यह स्वभाविक है कि राज्य मे कुछ लोग निवास करते हों। यद्यपि कि राज्य की जनसँख्या कितनी होनी चाहिए, इस विषय में विद्वानों में अनेक मत-विभिन्नताएँ मौजूद हैं। राजनीतिक दार्शनिक प्लेटो ने अपनी पुस्तक 'The LAWS' में उल्लिखित उप-आदर्श राज्य की जनसँख्या 5040 मानी है। अरस्तू का कहना था कि जनसंख्या की सीमा अवश्य निश्चित होनी चाहिए। उसने यह सिद्धांत प्रतिपादित किया कि जनसंख्या न तो अत्यधिक होनी चाहिए और न ही अत्यधिक कम। अरस्तू के अनुसार राज्य की जनसंख्या इतनी ही होनी

PTO

Scanned with CamScanner

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
MO- 9415376545
B.A PART-I (Sub./Gen.)
LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No................ Date. 04/12/20

चाहिए कि जिससे राज्य के समक्ष भरण-पोषण की समस्या न पैदा हो तथा इतनी कम भी नहीं होनी चाहिए कि राज्य की दृष्टि से सुरक्षा न हो सके।

विचारक रूसो ने आदर्श राज्य की जनसंख्या 10,000 निर्धारित की। रूसो के समय तक राष्ट्रीय राज्य की अवधारणा भली-भाँति विकसित हो चुकी थी। ऐसा माना जाता है कि उसने जेनेवा के कैंटन के सम्बंध में उपयुक्त संख्या निर्धारित की थी। आधुनिक राज्यों में जनसंख्या के मुद्दे पर व्यापक भिन्नता परिलक्षित होती है। एक ओर चीन और भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश हैं जबकि दूसरी ओर मालदीव और सेन मेरिनो जैसे अत्यल्प जनसंख्या वाले देश हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जनसंख्या के सन्दर्भ में अरस्तू का मत ही ज्यादा उचित प्रतीत होता है क्योंकि उसने राज्य की जनसंख्या राज्य की क्षमता के अनुरूप संतुलित होने की बात कही थी

(2) निश्चित भूक्षेत्र या प्रदेश — बिना निश्चित भूक्षेत्र या प्रदेश के राज्य के अस्तित्व का प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि कोई ~~इकाई~~ राज्य बन जा सके, इसके लिए उसकी जनसंख्या का स्थाई रूप से किसी भूक्षेत्र का निवासी होना अनिवार्य है। ब्लण्टशली ने कहा है कि "जिस प्रकार राज्य का वैयक्तिक आधार जनता है उसी प्रकार प्रदेश उसका भौतिक आधार है।"

विचारक हाल के शब्दों में- "आधुनिक सभ्यता की परिस्थितियाँ जिनके अनुसार भूमि या सम्पत्ति के साथ सम्बन्ध माना जाता है, एक निश्चित भूमि के अधिकार को राज्य की व्यवहारिक आवश्यकता बना देती है।" विचारक डुग्वी, क्लिकी और सिले जैसे विद्वान भूक्षेत्र को राज्य का अनिवार्य क्षेत्र नहीं मानते हैं।

क्षेत्र या प्रदेश में केवल स्थल भाग ही नहीं बल्कि इसमें राज्य का समस्त

PTO
Continue Next Date

Scanned with CamScanner